

# Inhalt

|  |    |
|--|----|
| <b>Vorwort</b>                               | 9  |
| <br>   |    |
| <b>1. Kapitel    Sich vorbereiten</b>        | 11 |
| Advent                                       | 11 |
| Ein besonderer Adventskalender               | 12 |
| Türen öffnen                                 | 13 |
| Wie im Märchen                               | 14 |
| Gebet  | 15 |
| Sorgen im Advent                             | 16 |
| Adventswunsch                                | 17 |
| Wie soll ich dich empfangen? (EG 11)         | 18 |
| Vor der Tür                                  | 19 |
| Gebet  | 20 |
| <br>   |    |
| <b>2. Kapitel    Die Sehnsucht aushalten</b> | 21 |
| Die offene Tür zum Himmel                    | 21 |
| Gebet  | 23 |
| Barbaratag (4. Dezember)                     | 24 |
| Barbarazweige                                | 25 |
| Den Möglichkeitssinn trainieren              | 26 |
| Spaziergang im Advent                        | 27 |
| Wunschzettel                                 | 28 |
| Geschenke einpacken                          | 29 |
| Der Super-Supermarkt                         | 30 |
| Warten üben                                  | 31 |
| <br>   |    |
| <b>3. Kapitel    Der Stille lauschen</b>     | 32 |
| Von der Stille                               | 32 |
| Einladungen zur Stille                       | 33 |
| In der Stille                                | 34 |
| Die heilsame Schönheit der Stille            | 35 |
| Gebet  | 36 |
| Am stillen See                               | 37 |
| Die Stimme des Friedens                      | 38 |

|  |        |
|--|--------|
| Still sein   | 39     |
| Variationen über die Stille                            | 40     |
| Segenswunsch   | 41     |
| <br><b>4. Kapitel    Unterwegs sein</b>                | <br>42 |
| Von Nazareth nach Bethlehem                            | 42     |
| Im Dezemberdunkel                                      | 43     |
| Auf dem Weihnachtsmarkt                                | 44     |
| Unfall   | 45     |
| Maria besucht Elisabeth                                | 46     |
| Elisabeth  | 47     |
| Wege wagen   | 48     |
| Auf dem Weg  | 49     |
| Gebet  | 50     |
| Segenswunsch für den Weg                               | 51     |
| <br><b>5. Kapitel    Auf das wachsende Licht sehen</b> | <br>52 |
| Wachsendes Licht                                       | 52     |
| Kerzen anzünden  | 54     |
| Gebet für zwei Stimmen                                 | 55     |
| Ausgerechnet am 13. (Luciatag)                         | 56     |
| Lucia  | 57     |
| So viele Lichter                                       | 58     |
| Bei Kerzenlicht  | 59     |
| Das dritte Licht                                       | 60     |
| Ins Buch des Lebens                                    | 61     |
| Segenswunsch   | 62     |
| <br><b>6. Kapitel    Engel vernehmen</b>               | <br>63 |
| Engel im Advent  | 63     |
| In der Fußgängerzone                                   | 65     |
| Unter die Fittiche                                     | 66     |
| Gebet  | 67     |
| Paul Klee und die Engel                                | 68     |
| Engel, sich verfehlend                                 | 70     |
| Engel im Werden  | 71     |
| Der Seher  | 72     |
| Ohne Flügel  | 73     |

|  |     |
|--|-----|
| Segenswunsch                                       | 75  |
| Die Engel  | 76  |
| <b>7. Kapitel Gutes tun</b>                        | 77  |
| Genug  | 77  |
| Ich darf   | 78  |
| Andersherum  | 79  |
| Tag der Menschenrechte (10. Dezember)              | 80  |
| Gebet  | 81  |
| Jesus vor der Tür                                  | 82  |
| Weihnachtslied                                     | 84  |
| Ein Nikolaus mit Knopf im Ohr (6. Dezember)        | 85  |
| Fast ein Krimi                                     | 86  |
| Segenswunsch                                       | 87  |
| <b>8. Kapitel Nach Sternen greifen</b>             | 88  |
| Von den Sternen                                    | 88  |
| Zu lang  | 89  |
| Stroh und Stern                                    | 90  |
| Wer?   | 91  |
| Die Nacht ist vorgedrungen (EG 16)                 | 92  |
| Gebet  | 93  |
| Segenswunsch                                       | 94  |
| Transparenz  | 95  |
| Adventswunsch                                      | 96  |
| Schatten im Licht                                  | 97  |
| <b>9. Kapitel Zwischen Hirten und Weisen gehen</b> | 98  |
| Von Träumern und Realisten                         | 98  |
| Gebet  | 100 |
| Weiser werden                                      | 101 |
| Ohne das Deutewort                                 | 102 |
| Mutig sein   | 103 |
| Wieder neu   | 104 |
| Die Klarheit des Herrn                             | 105 |
| Wer sagt denn . . .                                | 106 |
| Flashmob   | 107 |
| Am Wegesrand                                       | 108 |

|                    |   |     |
|--------------------|---|-----|
| <b>10. Kapitel</b> | <b>Ankommen im Stall</b>                                | 109 |
|                    | Außerhalb der Mauer                                     | 109 |
|                    | Erich Fried: Weihnachtslied                             | 110 |
|                    | Alle Jahre wieder                                       | 112 |
|                    | Josef, die Randgestalt                                  | 113 |
|                    | Gebet   | 114 |
|                    | Segenswunsch  | 115 |
|                    | Geburtstagsparty  | 116 |
|                    | Fragen an Gott  | 117 |
|                    | Thomas, der Zweifler (21. Dezember)                     | 118 |
|                    | Über allem: die Liebe                                   | 120 |
|                    | rosen   | 121 |
| <b>11. Kapitel</b> | <b>An der Krippe stehen</b>                             | 122 |
|                    | Ich stehe an deiner Krippe hier (EG 37)                 | 122 |
|                    | An der Krippe   | 123 |
|                    | Gott über allem   | 124 |
|                    | Schweigegebet   | 125 |
|                    | Adventrede - Resonanzen auf ein Gedicht von Jesse Thoor | 126 |
|                    | Verwandelt  | 128 |
|                    | Die nur an Weihnachten kommen                           | 129 |
|                    | Gebet   | 130 |
|                    | Heilige Nacht   | 131 |
| <b>12. Kapitel</b> | <b>In den neuen Alltag zurückkehren</b>                 | 132 |
|                    | Nach dem Abspann  | 132 |
|                    | Advent im Alltag  | 134 |
|                    | Was werden könnte                                       | 135 |
|                    | Gebet   | 136 |
|                    | Weihnachten gegenwärtig                                 | 137 |
|                    | Frieden auf Erden                                       | 138 |
|                    | Warum ...   | 140 |
|                    | Euch ist ein Kind geboren                               | 141 |
|                    | Segenswunsch  | 142 |
|                    | Vor dem Fenster   | 143 |
|                    | <b>Platz für eigene Gedanken</b>                        | 144 |
|                    | <b>Dank</b>   | 153 |
|                    | <b>Quellenverzeichnis</b>                               | 155 |